SHODH SAMAGAM

ISSN : 2581-6918 (Online), 2582-1792 (PRINT)

'मैला आंचल'' सर्वश्रेष्ठ आंचलिक उपन्यास

भूपेन्द्र सिंह, (Ph. D.), हिंदी विभाग,
आशुतोष चतुर्वेदी, शोधार्थी, हिंदी विभाग, एम. फिल. द्वितीय सेमेस्टर
शा. ठाकुर रणमत सिंह (स्वशासी एवं उत्कृष्ट), महाविद्यालय, रीवा, मध्यप्रदेश, भारत

ORIGINAL ARTICLE

Corresponding Authors
भूपेन्द्र सिंह, (Ph. D.), हिंदी विभाग,
आशुतोष चतुर्वेदी, शोधार्थी, हिंदी विभाग,
एम. फिल. द्वितीय सेमेस्टर
शा. ठाकुर रणमत सिंह (स्वशासी एवं उत्कृष्ट),
महाविद्यालय, रीवा, मध्यप्रदेश, भारत

shodhsamagam1@gmail.com

Received on : 06/08/2021
Revised on : -----
Accepted on : 13/08/2021
Plagiarism : 00% on 06/08/2021

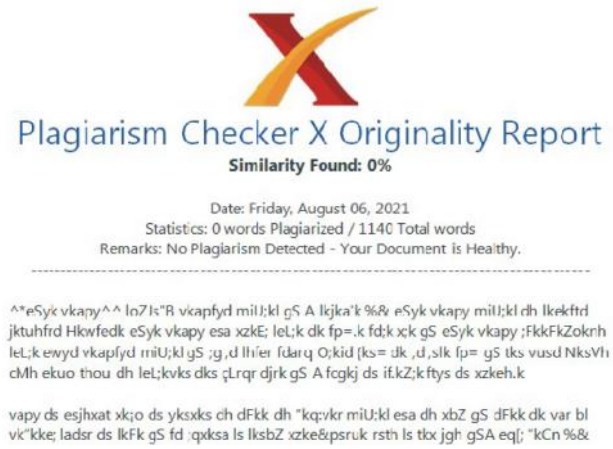
Plagiarism Checker X Originality Report
Similarity Found: 0%

Date: Friday, August 06, 2021
Statistics: 0 words Plagiarized / 1140 Total words
Remarks: No Plagiarism Detected - Your Document is Healthy.

^*eSyk vkapy^^ lo7 ls"B vkapfyd miU;kl gS A lkjka'k %& eSyk vkapy miU;kl dh lkekftd jktuhfrd Hkwfedk eSyk vkapy esa xzkE; leL;k dk fp=.k fd;k x;k gS eSyk vkapy ;FkkFkZokrh leL;k ewyd vkapfyd miU;kl gS ;g ,d lhfer fdarq O;kid {ks= dk ,d ,slk fp= gS tks vusd NksVh cMh ekuo thou dh leL;kvks dks çLrqr djrk gS A fcgkj ds if.kZ;k ftys ds xzkeh.k

vapy ds esjhxat xk;o ds yksxks ch dFkk dh "kq:vkr miU;kl esa dh xbZ gS dFkk dk var bl vk"kke; ladsr ds lkFk gS fd :qxksa ls lksbZ xzke&psruk rsth ls tkx jgh gSA eq[; "kCn %&

शोध सार

मैला आंचल उपन्यास एक सामाजिक व राजनीतिक भूमिका को प्रस्तुत करता है। मैला आंचल में ग्राम्य समस्या का चित्रण किया गया है। मैला आंचल यथार्थवादी समस्या मूलक आंचलिक उपन्यास है, यह एक सीमित किंतु व्यापक क्षेत्र का एक ऐसा चित्र है जो अनेक छोटी बडी मानव जीवन की समस्याओ को प्रस्तुत करता है। बिहार के पूर्णिया जिले के ग्रामीण अंचल के मेरीगंज गाँव के लोगो की कथा से शुरूआत उपन्यास में की गई है। कथा का अंत इस आशामय संकेत के साथ है कि युगों से सोई ग्राम–चेतना तेजी से जाग रही है।

मुख्य शब्द

उपन्यास, ग्रामीण अंचल, परिदृश्य, सामाजिक संघर्ष.

मैला आँचल' का नायक एक युवा डॉक्टर है जो अपनी शिक्षा पूरी करने के बाद पिछड़े गाँव को अपने कार्य–क्षेत्र के रूप में चुनता है, तथा इसी क्रम में ग्रामीण जीवन के पिछड़ेपन, दुःख–दैन्य, अभाव, अज्ञान, अन्धविश्वास के साथ–साथ तरह–तरह के सामाजिक शोषण–चक्रों में फँसी हुई जनता की पीड़ाओं और संघर्षों से भी उसका साक्षात्कार होता है। कथा का अन्त इस आशामय संकेत के साथ होता है कि युगों से सोई हुई ग्राम–चेतना तेजी से जाग रही है।

इस उपन्यास में पाँच प्रमुख नारीपात्र हैं लक्ष्मी, कमला, फुलिया, मंगलादेवी और डॉ. ... लेकिन प्रधानता की दृष्टि से लक्ष्मी और कमला ही मुख्य नारी पात्र हैं। लक्ष्मी का परिचय हमें मेरीगंज मठ के अन्धे महन्त सेवादास की दासी या रखैल के रूप में प्राप्त होता है।

इस उपन्यास का महत्व केवल एक आंचलिक उपन्यास होने तक ही सीमित नहीं है, यह हिंदी का व

भारतीय उपन्यास साहित्य का एक अत्यंत श्रेष्ठ उपन्यास भी माना जाता है। अपने अंचल को अपनी रचनाओं के केंद्र में रख कर प्रस्तुत करने के कारण फणीश्वरनाथ रेणु हिंदी में आंचलिक उपन्यास की परम्परा के प्रवर्तक के रूप में प्रतिष्ठित हुए। इसका प्रकाशन समता प्रकाशन में हुआ था।

रेणु जी कृत इस उपन्यास 'मैला आँचल' को गोदान के बाद हिंदी साहित्य का सर्वश्रेष्ठ उपन्यास माना जाता है। इस उपन्यास के द्वारा 'रेणु' जी ने पूरे भारत के ग्रामीण जीवन का चित्रण करने की कोशिश की है और कहा है कि कथा की सारी अच्छाइयों और बुराइयों के साथ साहित्य की दहलीज पर आ खड़ा हुआ हूँ, पता नहीं अच्छा किया या बुरा। जो भी हो, अपनी निष्ठा में कमी महसूस नहीं करता।

मैला आंचल 'रेणु' जी का प्रतिनिधि उपन्यास है, यह हिंदी का श्रेष्ठ और सशक्त आंचलिक उपन्यास है। नेपाल की सीमा से सटे उत्तर पूर्वी बिहार के एक पिछड़े ग्रामीण अंचल को पृष्ठभूमि बनाकर रेणु जी ने इसमें वहाँ के जीवन का, जिससे वह स्वयं ही घनिष्ठ रुप से जुड़े हुए थे अत्यंत जीवंत और मुखर चित्रण किया हैं। सन् 1954 में प्रकाशित इस उपन्यास की कथा वस्तु बिहार राज्य के पूर्णिया जिले के मेरीगंज की ग्रामीण जिंदगी से संबंध है। यह स्वतंत्र होते तथा उसके बाद के भारत के राजनीतिक, आर्थिक और सामाजिक परिदृश्य का ग्रामीण संस्करण है। रेणु के अनुसार इसमें फूल भी है, शूल भी है, धूल भी है, गुलाब भी है और कीचड़ भी है। मैं किसी से दामन बचाकर निकल नहीं पाया। इसमें गरीबी, रोग, भुखमरी, जहालत, धर्म की आड़ में हो रहे व्यभिचार, शोषण, बाह्याडंबरों, अंधविश्वासों आदि का चित्रण है। शिल्प की दृष्टि से इसमें फिल्म की तरह घटनाएं एक के बाद एक घटकर विलीन हो जाती है और दूसरी प्रारंभ हो जाती है। इसमें घटना प्रधानता है किंतु कोई केन्द्रीय चरित्र या कथा नहीं है। इसमें नाटकीयता और किस्सागोई शैली का प्रयोग किया गया है। इसे हिन्दी में आँचलिक उपन्यासों के प्रवर्तन का श्रेय भी प्राप्त है।

उपन्यास की शैली सहज है और पूरे उपन्यास में प्रवाह बना रहता है। रेणु जी ने दो लोगों में संवाद की शैली का प्रयोग कम करते हुए प्रश्नोत्तर विधा का प्रयोग कहीं अधिक किया है। गांव में किसी का किसी बारे में सोचना या निरर्थक वार्तालापों को उन्होंने ऐसे ही व्यक्त कर दिया है। एक बानगी देखिये – "चलो! चलो! पुरैनियाँ चलो! मेनिस्टर साहब आ रहे हैं! औरत–मर्द, बाल–बच्चा, झंडा–पत्तखा और इनकिलास–जिन्दबाघ करते हुए पुरैनियाँ चलो ! ३ रेलगाड़ी का टिकस? ३ कैसा बेकूफ है! मिनिस्टर साहब आ रहे हैं और गाडी में टिकस लगेगा? बालदेव जी बोले हैं, मिनिस्टर साहब से कहना होगा, कोटा में कपडा बहुत कम मिलता है।" पूरे उपन्यास में लोकगीतों का जमकर प्रयोग किया गया है जिनमे संयोग, वियोग, प्रकृति प्रेम इत्यादि भाव व्यक्त किये गए हैं। वाद्य यंत्रों की आवाज को रेणु जी ने जगह–जगह प्रयोग किया है और ये आवाजें कई बार कथानक बदलने के लिए इस्तेमाल की गई हैं।

मैला आंचल औपान्यासिक परंपरा की सर्वश्रेष्ठ कृति रेणु जी की मैला आंचल वस्तु और शिल्प दोनो स्तरों पर सबसे अलग है। इसके एक शिल्प में ग्रामीण को दिखलाया गया है, इसकी सबसे बड़ी विशेषता है कि इसका नायक कोई व्यक्ति नही पूरा अंचल ही इसका नायक है।

आलोचक सूरज पालीवाल का कहना है कि ग्रामीण जीवन की सूक्ष्म से सूक्ष्म घटनाएं और उसमे निहित मानवीयताओ का रेणु जी ने जिस बारीकी से वर्णन किया है यह वास्तव में उनकी निष्ठा और आस्था का प्रतीक है। स्वाधीन भारत के बदलते गांव का एक जीवन चित्र प्रस्तुत करने में यह उपन्यास पूर्णतः सक्षम है।

डॉ० शान्ति स्तरूप– लिखते है कि लोक–कथाओ, लोक–नाटको, लोक–संस्कृतियो और लोक–जीवन की घटनाओ के साथ भारतीय ग्रामीण जीवन की ''युगीन ट्रेजडी'' को रेणु ने इतनी कलात्मकता के साथ गूथ दिया है की इस उपन्यास की शिल्प स्वयं में महाकव्यात्मक हो उठा है। आचार्य रामस्वरूप चतुर्वेदी की इस मान्यता के संबंध में अंचल से ध्वनि निकलती है कि इसके निवासी रहन–सहन और संस्कारो मे एक दूसरे के सादृश्य जितना अधिक होगा उतना ही एक अंचल दूसरे अंचल से भिन्न होगा।

इस प्रकार एक अंचल का चित्रण दूसरे अंचल के चित्रण और इस तरह मैला आंचल संपूर्ण हिंदी क्षेत्र के जातीय जीवन का अंकन करता है। इसमें अंचल के ब्योरो का चित्रण जितना विस्तृत है, वहाँ के जीवन का संवेदनात्मक अंकन उतना ही सूक्ष्म है। मेरीगंज और वहाँ के चरित्र में भारत का कोई भी गांव दिखाई दे सकता हैं।

निष्कर्ष

इस उपन्यास ने अपने लोकप्रियता के कई कीर्तिमान स्थापित कर लिए है। यह देश और हिन्दी भाषा की सर्वाधिक प्रभावशाली दस उपन्यासों में सें एक है। बिहार के एक पिछड़े ग्रामीण अंचल को पृष्ठभूमि बनाकर फणीश्वरनाथ रेणु ने इसमें वहाँ के जीवन का जिससे वह स्वयं भी घनिष्ठ रूप से जुड़े हुए थे, अत्यन्त जीवन्त और मुखर चित्रण किया है।

मैला आँचल का कथानायक एक युवा डॉ. है जो अपनी शिक्षा पूरी करने के बाद एक पिछड़े गाँव को अपने कार्य–क्षेत्र के रूप में चुनता है तथा इसी क्रम में ग्रामीण जीवन के पिछड़ेपन, दुःख, दैन्य, अभाव, अज्ञान, अंधविश्वास के साथ–साथ तरह के सामाजिक शोषण चक्र में फँसी हुई जनता की पीड़ाओं और संघर्षो से भी उसका साक्षात्कार होता है।

संदर्भ सूची

1. फणीश्वरनाथ 'रेणु', *''मैला आँचल'',* (प्रथम संस्करण) भूमिका।
2. बंसीधर, हिन्दी के आँचलिक उपन्यास सिद्धांत और समीक्षा।
3. ठाकुर, देवेश, *मैला आँचल',* की रचना प्रक्रिया ।
4. उपाध्याय, कृष्णदेव, *'लोक साहित्य'* की भूमिका।

****